

CBSE कक्षा - 9 संस्कृत
एनसीईआरटी प्रश्न-उत्तर
पाठः - 10 जटायोः शौर्यम्

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- i. "जटायो! पश्य" इति का वदति?
- ii. जटायुः रावणं किं कथयति?
- iii. क्रोधवशात् रावणः किं कर्तुम् उद्यतः अभवत्?
- iv. पतगेश्वरः रावणस्य कीदृशं चापं सशरं बभञ्ज?
- v. हताश्वो हतसारथिः रावणः कुत्र अपतत्?

उत्तराणि-

- i. "जटायो! पश्य" इति सीता वदति।
- ii. जटायुः रावणं कथयति यत् नीचां मतिं परदाराभिमर्शनात् निवर्तय। धीरः तत् न समाचरेत् यत् परः विगर्हयेत्।
- iii. क्रोधवशात् रावणः तलेन (तलवारेण) जटायुं हन्तुम् उद्यतः अभवत्।
- iv. पतगेश्वरः रावणस्य मुक्रतामणिविभूषितं चापं सशरं बभञ्ज।
- v. हताश्वो हतसारथिः रावणः भुवि अपतत्।

2. उदाहरणमनुसृत्य णिनि-प्रत्ययप्रयोगं कृत्वा पदानि रचयत-

यथा- गुण + णिनि - गुणिन् (गुणी)

दान + णिनि - दानिन् (दानी)

- i. कवच + णिनि - _____
- ii. शर + णिनि - _____
- iii. कुशल + णिनि - _____
- iv. धन + णिनि - _____
- v. दण्ड + णिनि - _____

उत्तराणि-

- i. कवचिन् (कवची)
- ii. शरिन् (शरी)
- iii. कुशलिन् (कुशली)
- iv. धनिन् (धनी)
- v. दण्डिन् (दण्डी)

3. रावणस्य जटायोश्च विशेषणानि सम्मिलितरूपेण लिखितानि तानि पृथक्-पृथक् कृत्वा लिखत-

युवा, सशरः, वृद्धः, हताश्वः, महाबलः, पतगसत्तमः, भग्नधन्वा, महागृध्रः, खगाधिपः, क्रोधमूर्च्छितः, पतगेश्वरः, सरथः, कवची, शरी

| यथा- रावणः | जटायुः |
|------------|--------|
| युवा | वृद्धः |
| _____ | _____ |
| _____ | _____ |
| _____ | _____ |
| _____ | _____ |
| _____ | _____ |
| _____ | _____ |
| _____ | _____ |

उत्तराणि-

| यथा- रावणः | जटायुः |
|-----------------|-----------|
| युवा | वृद्धः |
| सशरः | महाबलः |
| हताश्वः | पतगसत्तमः |
| भग्नधन्वा | महागृध्रः |
| क्रोधमूर्च्छितः | खगाधिपः |
| सरथः | पतगेश्वरः |
| कवची | |
| शरी | |

4. सन्धि/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत-

यथा- च + आदाय = चादाय

i. हत + अश्वः = _____

ii. तुण्डेन + अस्य = _____

iii. _____ + _____ = बभञ्जास्य

iv. _____ + _____ = अङ्गेनादाय

v. _____ + _____ = खगाधिपः

उत्तराणि-

- i. हत + अश्वः = हताश्वः
- ii. तुण्डेन + अस्य = तुण्डेनास्य
- iii. बभञ्ज + अस्य = बभञ्जास्य
- iv. अङ्गेन + आदाय = अङ्गेनादाय
- v. खग + अधिपः = खगाधिपः

5. 'क' स्तम्भे लिखितानां पदानां पर्यायाः 'ख' स्तम्भे लिखिताः। तान् यथासमक्षं योजयत-

| क | ख |
|-----------|---------------|
| कवची | अपतत् |
| आशु | पक्षिश्रेष्ठः |
| विरथः | पृथिव्याम् |
| पपात | कवचधारी |
| भुवि | शीघ्रम् |
| पतगसत्तमः | रथविहीनः |

उत्तराणि-

| क | ख |
|-----------|---------------|
| कवची | कवचधारी |
| आशु | शीघ्रम् |
| विरथः | रथविहीनः |
| पपात | अपतत् |
| भुवि | पृथिव्याम् |
| पतगसत्तमः | पक्षिश्रेष्ठः |

6. अधोलिखितानां पदानां/विलोमपदानि मञ्जूषायां दत्तेषु पदेषु चित्वा यथासमक्षं लिखत-

[मन्दम् पुण्यकर्मणा हसन्ती अनार्य अनतिक्रम्य प्रदाय देवेन्द्रेण प्रशंसेत् दक्षिणेन युवा]

| पदानि | विलोमशब्दाः |
|--------------|-------------|
| (क) विलपन्ती | _____ |
| (ख) आर्य | _____ |
| | |

| | |
|--------------------|-------|
| (ग) राक्षसेन्द्रेण | _____ |
| (घ) पापकर्मणा | _____ |
| (ङ) क्षिप्रम् | _____ |
| (च) विगर्हयेत् | _____ |
| (छ) वृद्धः | _____ |
| (ज) आदाय | _____ |
| (झ) वामेन | _____ |
| (ञ) अतिक्रम्य | _____ |

उत्तराणि-

| पदानि | विलोमशब्दाः |
|--------------------|--------------------|
| (क) विलपन्ती | <u>हसन्ती</u> |
| (ख) आर्य | <u>अनार्य</u> |
| (ग) राक्षसेन्द्रेण | <u>देवेन्द्रेण</u> |
| (घ) पापकर्मणा | <u>पुण्यकर्मणा</u> |
| (ङ) क्षिप्रम् | <u>मन्दम्</u> |
| (च) विगर्हयेत् | <u>प्रशंसेत्</u> |
| (छ) वृद्धः | <u>युवा</u> |
| (ज) आदाय | <u>प्रदाय</u> |
| (झ) वामेन | <u>दक्षिणेन</u> |
| (ञ) अतिक्रम्य | <u>अनतिक्रम्य</u> |

7. (क) अधोलिखितानि विशेषणपदानि प्रयुज्य संस्कृतवाक्यानि रचयत-

- शुभाम् _____
- हतसारथिः _____
- कवची _____
- खगाधिपः _____
- वामेन _____

उत्तराणि-

-
- i. जटायुः शुभाम् वाणीम् अवदत्।
 - ii. हतसारथिः रावणः भुवि पपात।
 - iii. रावणः कवची आसीत्।
 - iv. खगाधिपः जटायुः रावणम् अवदत्।
 - v. देवः वामेन हस्तेन लिखति।

(ख) उदाहरणमनुसृत्य समस्तं पदं रचयत-

यथा- त्रायाणां लोकानां समाहारः - त्रिलोकी

- i. पञ्चानां वटानां समाहारः - _____
- ii. सप्तानां पदानां समाहारः - _____
- iii. अष्टानां भुजानां समाहारः - _____
- iv. चतुर्णां मुखानां समाहारः - _____

उत्तराणि-

- i. पञ्चवटी
 - ii. सप्तपदी
 - iii. अष्टभूजी
 - iv. चतुर्मुखी
-